मणिकुण्डल-कवितावली

प्रथम नमन कर जोरि, गणपति गौरीनन्द को।
करूं प्रणाम बहोरि, सियाराम हनुमन्त को ।
लिखूं कथा के बोल माँ वाणी के वास में।
रमा रहे मन मोर मणिकुण्डल की आस में।।

देहु बुद्धि आशीष निज जननी को है नमन।।
करके हृदय विचार सभी पूर्व जन स्मरण।।
पूर्ण करो जगदीश, राम कृपा का हूँ धनी।
लिखूं धरे शिव-प्रीत मणिकुण्डल की जीवनी।।

सरयू तटवासी नगर, दशरथ हृदय ललाम।
पुरी अयोध्या जो बसे, मणिकौशल के धाम।।
है सब के दिल में राम का नाम।।१।।

मणिकुण्डल के जन्म पे, मात पिता हरषाय।
सवा सवा मन मोदका, घर घर दियो पठाय।।
राज से नगर सेठ पद पाय।।२।।

मणिकौशल शाकम्भरी, गुरु वशिष्ठ ढिंग जाय।
मणिकुण्डल शुभनाम ले, नामकरण करवाय।।
राजगुरु से वरदान दिलाय।।३।।

रवी पुष्य शुभ पर्व ले, पाठी पूजी जाय।
स्वयं सुमन्त पधार कर, आशिष देहनवाय।।
शारदा मन्दिर दियो पठाय।।४।।

चार वर्ष शिशु खेल में, औरन रहा पढ़ाय।
मध्य मध्य डांटे यथा, स्वयं गुरुजी आय।।
बालपन की चंचलता लाय।।५।।

राम गमन दशरथ वचन, हुआ चतुर्दिक शोर।
कालरात्रि सम बीतती, नहीं हो रहा भोर।।
राज कुछ समझ न आवे तोर।।६।।

ऐसे विपदाकाल में, मणिकौशल ले नाम।
क्या कैसे अब हम करें, बैठ गए निज धाम।।
प्रात ही चल देंगे श्रीराम।।७।।

पिता कष्ट ऐसा लखा, मणिकुण्डल मन मांहि।
कहा-बुला कर लें सभा, सुमति बने सब मांहि।।
राम और राम नाम प्रभुताई।।८।।

बैठक में निर्णय हुआ, मिलकर रोकें राम।
नहीं रुकें, हम भी चलें, छोड़ अवध सब काम।।
राम के संग ही हो विश्राम।।९।।

यह निर्णय संकल्प कर, लौटे जन निज वास।
नहीं पलक झपकी तनिक, गई भूख अरु प्यास।।
राम पर इतना है विश्वास।।१०।।

गुरू मात पितु को नमन, सुबह करत रघुनाथ।
वन रूपी कर्मस्थली, तीर धनुष ले हाथ।।
जा रहे राम लखन सिय साथ ।।११।।

पतझड़ हैं होने लगे, आम नीम सब पेड़।
स्वयं टूटने ही लगी, हर खेतों की मेड़।।
वायु मन पीपल को मत छेड़ ।।१२।।

पुष्पकली मुरझा रहे, तितली भौंरे पस्त।
भानु उदय के समय भी रवि दिखते हैं अस्त।।
घाघरा जल जलचर सब त्रस्त ।।१३।।

बादल भी बरसन लगे, आंधी आई जोर।
घोर अंधेरा छा गया, प्रकृति मचावे शोर।।
टूटते पेंड़ रो रहे मोर ।।१४।।

गौ, बैलन के साथ ही, हाथी रहे चिंघाड़।
घोड़े भी टपटप करें, रोवें मन को मार।।
सारिका, पशु, अणु, व्यथित अपार ।।१५।।

मातायें साकेत की, तन मन शोक समाय।
नर नारी अतिवृद्ध भी, लाठी टेकत आय।।
राम को हाथ पकड़ हम लाय।।१६।।

मुखमलीन सबको रहयो, नहि मज्जन भी कीन।
राम विरह की कल्पना में बिलखे ज्यो मीन।।
हो गया आज अवध श्री हीन ।।१७।।

निर्णय के अनुसार ही वैश्य कहें युवराज।
आप हमारे प्राण हैं, बिना प्राण नहिं काज।।
छोड़ कर मत जाओं प्रभु आज ।।१८।।

यह कहि कहिं कर लेट गै, अवध वणिक पथ माय।
प्रभु अचम्भित का करैं, इन कैसे समझाय।।
राम तो प्रेम विवश हो जाय।।१९।।

राम सिया करबद्ध हो, अग्रज को सिरनाय।
अनुजजनों को प्यार से, पितु आज्ञा बतलाय।।
राम संग लखन सबै समझाय।।२०।।

मणिकुण्डल मानी सकल, पितु आज्ञा को धर्म।
हम सब भी संग ही रहे, यही हमारा मर्म।।
राजसुत मत रोको मम कर्म ।।२१।।

जहाँ राम तहं अवध है, नहीं अवध बिन राम।।
राम संग वन अवध है, अवध बचा क्या काम।।
हैं चला अवध नगर संग राम।।२२।।

लखनलाल जी चल रहे,राम सिया के संग।
अवध निवासी साथ में, देखें प्रभु के रंग।।
देव यह देख हो रहे दंग।।२३।।

चलते चलते थक गये, नहीं पथिक विश्राम।
राम निरख सुख के लिये नहीं छाँह और घाम।।
आज हर मन में बसे श्री राम ।२४।।

अगले दिन भी चल पड़े, चौबीस कोस प्रमान।
मणिकुण्डल बालक कहिन, ले लो प्रभु से ज्ञान
राम अवतारी हैं भगवान ।।२५।।

अवध जनों का साथ लख, सुरगण भये अधीर।
भक्त बेड़िया प्रेम की, प्रभू बंधे जन्जीर।।
राम अवतार ध्येय अब नीर ।।२६।।

नारद जी कहने लगे, मत विचलो सुरपक्ष।
विधना ने जो जो रचा, तेहि विधि होगा अक्ष।।
साधना धैर्य पूर्ण कर लक्ष।।२७।।

इसी तरह से दो दिवस, गये बीत प्रभु मौन।
संग लगे जो अवध जन, उन्हें मनावे कौन।।
बात सब मन की जानै जौन ।।२८।।

सियासंग प्रभु राम ने, किया विचार प्रवाह।
आज रात्रि ही चल पड़ें, संग लखन निज राह।।
औतरण का उद्देश्य अथाह ।।२९।।

भक्त जो कोई जग गया, तनिक भनक भी पाय।
सकल अयोध्या नगर जन संग राम लग जाय।।
कष्ट में भक्त न देखे जाँय।।३०।।

मध्य रात्रि में उठ पड़े राम लखन सिय संग।
भक्त विचारे सो रहे, कल क्या होगा रंग।।
राम बिन सब होवेंगे दंग।।३१।।

विभू भक्त सब छोड़ कर, चले सघन वन ओर।
यथाशीघ्र हो दूरतम, जब लौ होवे भोर।।
राम मन विचलित भक्तन ओर ।।३२।।

रात्रि अंधेरा व्याप था, नहिं प्रकाश का छोर।
कंकड़ पत्थर गड्ढ भी रोके पग हर ओर ।।
राम के कदम न पीछे ओर ।।३३।।

सिया राजकुल में पली, साधन आठो याम।
उत्तल अवतल भूमि पर, चले लखन सिय राम।।
आज नहिं करना है विश्राम ।।३४।।

उषा किरण पहली भई, गये निकल अति दूर ।
इधर भक्तजन जागते, ढूंढे निकट व दूर ।।
राम का मोह चढ़ा भरपूर ।।३५।।

जब जाना श्री राम जी, गये जानकी संग
कहु बिलखे, कुछ सुस्त भै, हुए ध्यान सब भंग ।।
रो रहे अवध चले जो संग ।।३६।।

कुछ लौटे थे अवध पर, शेष कहें हम जाय।
जहां मिलेगे राम जी, वहीं कुटी बनवाय।।
ढूंढने आठ दिशायें जाय।।३७।।

कुछ प्रयाग को चल पड़े चित्रकूट कोई जाय।
विविध दिशाओं में चले, सब अनुमान लगाय।।
ढूंढते रामचरण भरमाय ।।३८।।

अवधजनों की टोलियाँ, बिखर गई चहुंओर।
मणिकौशल भी चल रहे, माँ गंगा के छोर
काशि तक निकल गये सिरमौर ।।३९।।

जनकपुरी को चल दिये, सम्भवतः मिल जाँय।
रामसिया उस क्षेंत्र में निज वनवास बितायं।।
रात दिन अवध वैश्य बतलायं।।४०।।

गया पाटलीपुत्र अरू सीतामढ़ी बिहार।
ढूंढ ढूंढ कर थक रहे, बस जावें दुइ चार।।
राम बस मिल जावें इक बार ।।४१।।

उधर रामसिय लखन को चित्रकूट मन भाय।
मंदाकिन सानिध्य में फटिक शिला हर्षाय।
यहीं पर रह वनवास बिताय।।४२।।

चित्रकूट पहुंचे जभी, अवधपुरी के लाल।
पाकर प्रभु को पास में, सब जन हो उत्ताल।।
आस्था-प्रभु पा वैश्य निहाल ।।४३।।

भरत मनाने राम को चित्रकूट जब आए।
संग अवध की प्रजा भी दर्शनार्थ वन आए।।
राम के संग मगर रह जाए।।४४।।

मन्दाकिन वन क्षेत्र में, ग्रीष्म शीत का जोर ।
पावस में घनघोर तम, कहूँ कीट कहुँ मोर।।
वामदा नगर बसायो जोर ।।४५।।

मगर टोलियाँ अन्य जो, विविध दिशा भटकाय।
मणिकौशल मिथिला सहित, यशपुर भी हो आय।।
राम का पता मगर नहिं पाय।।४६।।

मणिकुण्डल पितु मात संग, करे राम की खोज।
उत्तर से दक्षिण चले, रहा हृदय में ओज ।।
राम बल से ही सफल प्रयोज ।।४७।।

इसी तरह से चल रहे पगडंडी कहुं जाएं।
कोलभील जो भी मिले, सब मिल उन्हें बताएं।।
राम से ही मिलने हम जाए।।४८।।

चलते चलते मिल गया, वेणुगंग का तीर।
मणिकौशल संग वैश्य जन, कुछ कुछ हुए अधीर।।
मानसी व्यथा हरो रघुवीर ।।४६।।

मन्द मन्द गति चल रहे, साथ करै व्यापार।
राम मिलन के हेतु हम कष्ट सहेंगे अपार।।
यही है जीवन का है आधार ।।५०।।

जंगल में वनफल मिलें, नगर दुग्ध गौ पाय।
जगह जगह पर भटककर कर्मनिष्ठ कहलाय।
राम मन मन्दिर सदा बसाय ।।५१।।

जहां जाय तहँ पूछते, आये क्या रघुनाथ।
मगर नहीं कोई कहै, हमें मिले जगनाथ।।
राम सिय दर्शन दो अब साथ ।।५२।।

अमरावति जलग्राम या मलयगिरी उत्तंग।
अवध वणिक गण ढूंढते चर्चा करे प्रसंग
देवगण चकित देख यह रंग ।।५३।।

विविध नगर व ग्राम में ढूंढे मानी हार।
नगरी भौवन में किया कई वर्ष व्यापार।।
वैश्य मणिकौशल कीर्ति अपार ।। ५४।।

भौवन में ही मिल गया, गौतम नामी मित्र।
मधुभाषी, मिथ्या, कपट, पापाचार विचित्र।।
झूठमय प्रस्तुत करता चित्र।।५५।।

उसका मन षड़यन्त्र कर, अन्तःगर्वित हाय।
धोखा, हमला, कष्ट दे, स्वयं प्रफुल्लित पाय।।
साधुजन को पीड़ा मन भाय।।५६।।

मणिकुण्डल धर्मात्मा, गौतम द्वेष विचार।
मोहक बातों में रिझा, कह विदेश व्यापार।।
ले चला अवधलाल को पार ।।५७।।

पितु से आज्ञा मांग कर, निकल चले परदेश ।
गले लगा माता कहें सफल रहो हर देश
राम, सच और आचरण, वेश ।।५८।।

चलते चलते निकल गै नए नगर की ओर।
भौतिक सुख सम्पन्न था रहे सभी सिरमोर।।
काममद गौतम ढूंढे ठोर ।।५९।।

मणिकुण्डल से बोलता गौतम भ्रष्ट चरित्र ।
जीवन में है क्या धरा, भोगो हर सुख मित्र।।
यौन सुख ही जीवन का इत्र ।।६०।।

इतने कुत्सित भाव सुन मणिकुण्डल हैं दंग ।
गौतम पाप विचार है कैसे दूँ सत्संग।।
देव लख केर बेर को संग ।।६१।।

मणिकुण्डल कहने लगे ‘‘धर्म जगत का सार।
सत्य विलग कुछ भी नहीं, मिथ्या फिर संसार।।
प्राण ही हैं जीवन आधार’’ ।।६२।।

सत्कर्मो के पुण्य से, जीवन धन्य महान।
पापकर्म दुख शोक दें, वेद शास्त्र का ज्ञान।।
ईश ने ऐसा रचा विधान ।।६३।।

पर पीड़ा निन्दा करे, कुछ दिन हो अधिमान ।
पतन मार्ग पर स्खलित होकर हो अवमान।।
ईर्ष्या भाव नशावै मान ।६४।।

इस पर गौतम ने कहा, मणिकुण्डल हे मीत।
जिसका कथन यथार्थ हो उसकी होगी जीत
जीत धन लेने की है रीत ।।६५।।

'एवमस्तु' कह वैश्य ने, मानी गौतम शर्त।
नगर जनों से पूछने लगे ब्रह्म का अर्थ।।
ब्राह्मण सुत का प्रश्न अनर्थ ।।६६।।

धर्म सत्य पालन करें, जीवन बने पहार।
या फिर विविध प्रयास से सुख धनमय संसार।
लोक में कौन अधिक व्यवहार? ।।६७।।

नगर जनों ने तब कहा, भौतिकता का देश।
कैसे सुख, धन-धान्य हो, यही रहा उद्देश।।
याद अब किसे प्रभू-सन्देश ।।६८।।

नगर लोक व्यवहार में, तिकड़म छल परिवेश।
किस विधि सबकुछ पा सकूं, सबका यह उद्देश।।
रात दिन जियें मरें करें क्लेश ।।६९।।

इस पर गौतम ने कहा, मैं जीता हरहाल।
मणिकुण्डल ने दे दिया, साराधन तत्काल।।
देख मणिकुण्डल हृदय विशाल ।।७०।।

नगर पारकर चल पड़े, गोदावरि के तीर।
योगेश्वर श्रीवास जहँ, था एकान्त समीर।।
बोलता गौतम कटुता तीर ।।७१।।

उसने विविध विवाद कर, क्षत विक्षत कर अंग।
चला छोड़कर मित्र को, त्याग मित्रता रंग।।
देव विश्वासघात लख दंग ।।७२।।

मन्दिर पावन था निकट, योगविष्णु का वास।
अगहन सुदि एकादशी, छिटकै दिव्य प्रकाश।।
देव, मुनि, मन में दर्शन प्यास।।७३।।
महिमा चक्षुस्तीर्थ की, ऋषिमुनि करें बखान।
चक्षु मिले, जीवन मिले, यश-वैभव की खान।।
मात्र दर्शन गौदान समान।।७४।।
लंकापति राजा भये, नियमित दर्शन पाय।
विशल्यकरणि, संजीवनी से जीवन मिल जाय।।
वैभीषणि संग विभीषण आय।।७५।।
मणिकुण्डल से पूछते वैभीषणि कर नेह।
क्या परिचय, कैसे हुये, क्षत विक्षत केहि देह।।
गौतमी गंगा द्रवित सनेह।।७६।।

अवध निवासी वैश्य हूँ, राम भक्ति हिय वास।
पग पग ढूंढूं राम को, धर्म, सत्य, विश्वास।।
मानता खुद को प्रभु का दास।।७७।।

सुनकर ऐसी भावना, हुये विभीषण शान्त।
भेषज, मन्त्र प्रबन्धकर नष्ट करें तन क्लान्त।
आ रही पुनः प्रखरता कान्त।।७८।।

पुनः स्वस्थ सर्वांग हो, मणिकुण्डल भै दंग।
चमत्कार है हरि कृपा, हरि इच्छा हरि रंग।।
करूंगा हरि सेवा, सत्संग।।७९।।

अखिल राष्ट्र की एकता, मन में लिये विचार।
दक्षिण उत्तर सभ्यता का हो मिलन अपार।।
राम का विष्णु रूप आधार।।८०।।

ध्यानयोग की विधि रची, शिव ने होकर मस्त।
ध्यानयोग अभ्यास से मणिकुण्डल सिद्धहस्त।।
शोक, भय अरू तनाव हैं पस्त।।८१।।

परहित का संकल्प ले, चलते चलते तीर।
महाबली के देश में जा पहुंचे मनधीर।।
जानकर राजसुता की पीर।।८२।।

ऊंची जँह अट्टालिका, सुन्दर पक्के कूप।
नौ नौ घट भर बालिका, चले छाँह या धूप।।
नागरिक सुखी विहंसता रुप।।८३।।

गौपालन की साधना, नगर ग्राम सब पाय।
वस्त्राभूषण से सजे, बहुजन पग पग आय।।
देखकर मणिकुण्डल सुख पाय।।८४।।

गए राजप्रासाद जब, राजसुता बीमार।
मरणासन स्थिति विकट, मूर्छा करै प्रहार।।
कास, व्रण, ज्वर अरु वमन अपार।।८५।।

मरणासन स्थिति लखी महरुपा निःशक्त।
दिव्यमन्त्र औषधि सहित पूजन करें सशक्त।।
साधना होकर भाव विरक्त।।८६।।

सिंहराशि पर वास था, शनि का साढ़े सात।
वक्रदृष्टि भी शेष सब, आज खत्म हो जात।।
सूर्य-सुत नमन करौं शिव-प्रात।।८७।।

औषधि, मन्त्र, पुकार-हिय, भाग्य चक्र का वेग।
शनै शनै सिंहराशिनी, भई स्वस्थ सम्वेग।।
सोच से परे प्रकट आवेग।।८८।।

महरूपा आनन्दमय, दृश्य सभी लख पाय।
जन्म-अन्ध का दोष भी सदा सदा को जाय।।
राज्य में कौतूहल हर्षाय।।८९।।

नयनों में पहली उषा, दिव्य दृष्टि का भान।
नव कलरव, अदभुत नया, बदल गये प्रतिमान।।
चीरकर तम आलोकित भान।।९०।।

विविध रंग भी लख रही, झिलमिल झिलमिल रुप।
लगा जगत सब चमत्कृत, नव आनन्द स्वरुप।।
आशमय हुआ निराशित रुप।।९१।।

महाबली की घोषणा, राजपाठ अर्धांग।
मणिकुण्डल को दे रहे, महराजा राज्यांग।।
ले रहे नहीं मगर गौरांग।।९२।।

मन मन्दिर में छा गये, मणिकुण्डल के काज।
अर्ध नहीं पूरा दिया महाबली ने राज।।
राम हनुमान कृपा यह ताज।।६३।।

महरुपा श्रद्धा विनत, नमन करें बहुबार।
''यह जीवन है आपका, करो मुझे स्वीकार।।
मीन मैं तुम जल का संसार''।।६४।।

ध्यान किया पितुमात का, रामकृपा यह मान।
राजसुता संग राज्य को स्वीकारा श्रीमान।।
देश की प्रजा करे सम्मान।।६५।।

नगरी भौवन में बसे, मात पिता बुलवाय।
महाबली से प्राप्त सुख का अनुभव करवाय।।
मातपितु को यशवान बनाय।।६६।।

महाराज बन सोचते जनता का कल्यान।
सियाराम दर्शन ललक, करने अवध प्रयान।।
राम से ही जीवन-सन्धान।।९७।।

करने दर्शन राम के जाऊं अवध-निवास।
आदि शक्ति का यज्ञ कर मणिकुण्डल विश्वास।।
राम तो शीघ्र मिलेंगे आस।।९८।।

महापुरी से चल दिये महरुपा के साथ।
सप्तश्रंग आश्रम गये, जोड़े दोनों हाथ।।
राजरथ उतर नमाते माथ।।९९।।

रामटेक की घाटियाँ, उच्च्व शिखर रज-राम।
शीश नमन करते हुये, दोनों करैं प्रणाम।।
दे रहे हों वरदाँ श्री राम।।१००।।

सिवनी जंगल पारकर, गये नर्मदा तीर।
भेड़ाघाट प्रताप लख, तन मन हुआ अधीर।।
प्राकृतिक लीला निर्झर नीर।।१०१।।

मैहर शरभंगा लखत पहुंचे सिद्ध पहार।
चित्रकूट को बढ़ चले लेने राम बयार।।
राम की तपोभूमि का प्यार ।।१०२।।

मन्दाकिनि स्नान कर, गोदावरी मझाय।
कामदगिरी परिक्रमा मनोकामना पाय।।
राम की हर स्मृति सिर नाय।।१०३।।

चित्रकूट आगे बढ़े, अवध वणिक आगार।
नगर वामदा में मिले, बिछुड़े वणिक हजार।।
बालपन की यादें दो चार।।१०४।।

मानवता कल्याण का दृढ़ संकल्प विचार।
सूर्य-सुता को नाव से पति पत्नी कर पार।।
जा रहे ब्रह्मावर्त कछार।।१०५।।

विश्वधुरी गंगातटे, ब्रह्मावर्त पुनीत।
वाल्मीकि तपलीन जहँ दर्शन करें सुभीत।।
रानि संग मणिकुण्डल प्रभु प्रीत।।१०६।।

लोधेश्वर अभिषेक कर पारिजात की ओर।
बोरलिया में नमन कर अवधपुरी की ओर।।
राम की छठा दिखे चहुँ ओर।।१०७।।

हरियाली फैली डगर, खुशहाली हर भोर।
पवन-मलय, ऋतुराज ऋतु, आम्र मञ्जरी बोर।।
झूमते बालवृद्ध चितचोर।।१०८।।

मुर्ग बांग भी दे रहे, रवि शशि नित्य प्रकाश।
चिड़िया चीं चीं कर कहें, आपस का विश्वास।।
राम से देवलोक आभास।।१०९।।

अवध नगर में आ गये, रहे चतुर्दिक हेर।
निज निवास पहुंचे जभी, लिये पड़ोसी घेर।।
आ रहे हो तुम पहली बेर।।११०।।

राम मिलन के वास्ते अवध जनों के साथ।
चले राम दरबार को महरुपा के साथ।।
ले चले भेंट कीमती हाथ।।१११।।

राम दिव्य दरबार में पहुंचे भक्त तमाम।
मणिकुण्डल चरनन पड़े, पत्नी सहित प्रणाम।।
हार्दिक सुखपाते सियराम।।११२।।

‘‘कहाँ कहाँ ढूँढा तुम्हे, नगर, ग्राम वन छोर।
इतने वर्षों में मिले, हम तड़पे क्यों भोर?।
राम क्या सुधि आई थी मोर?।।११३।।

स्वामी तीनहु लोक के गले मिल रहे आज।
मणिकुण्डल को दे रहे चक्रवर्ति का ताज।।
देवगण समझ न पाये राज।।११४।।

महरुपा को दे रही, माँ सीता आशीष।
सुख, सौभाग्य अखण्ड हो, पुत्र रहें गुणधीश।।
चार सौ युग तक कीर्ति-अशीष।।११५।।

लखन, उर्मिला, माण्डवी, भरत संग हनुमान
श्रुतिकीर्ति शत्रुघ्न अरु गुरु वशिष्ट का मान।।
दोऊ सबको कर रहे प्रणाम।।११६।।

हनुमान जी कह रहे, मन जो राम बसाय।
हम उसकी रक्षा करें, प्रेम सहित गुण गाय।।
आपके वंशज भी सुख पाय।।११७।।

कलियुग में वंशज तेरे बहु मन्दिर बनवाय।
जन्म दिवस पूजन करें, नित्य ध्यान मन लाय।।
पौष पूरनमासी व्रत पाय।।११८।।

मणिकुण्डल व्रत जो रहे, मनवांछित फल पाय।
यश, धन, विद्या, पुत्र भी, सहज प्राप्त हो जाय।।
राम हनुमान कृपा नित पाय।।११९।।

मणिकुण्डल जन्मस्थली, मन्दिर कलियुग माय।
निकट गढ़ी हनुमान के अवध वणिक बनवाय।।
राजगुरु खुद भविष्य बतलाय।।१२०।।

घर प्रतिमा तेरी रखें, वास्तुदोष हों दूर।
उर में मणिकुण्डल कवच, रुके काम सब पूर।।
आरती दे ताकत भरपूर।।१२१।।

इसी तरह से प्रमुख जन, सब दीन्ही आशीष।
मंगल भाव बटोर सब, पुनः नवायो शीष।।
राम सिय-पद पर धर कर शीश।।१२२।।

मणिकुण्डल महपुर चले, विदा करत श्रीराम।
भक्तों की रक्षा करें, संकट हरते राम।।
राम का नाम मन्त्र फलकाम।।१२३।।

वरदाँ अरु आशीष पा महापुरी जब आय।
जननायक बन राजकर मणि माणिक सुत पाय।।
राम की याद सदा मन भाय।।१२४।।

कुशल राज्य शासन किया, साधे आठो अंग।
कष्ट रहित हों प्रजानन, सबमें बढ़े उमंग।।
खेल, साहित्य, धर्मपथ संग।।१२५।।

पुराणादि वर्णन करें मणिकुण्डल महराज।
नमन उमाशंकर करें, कर दो सबकेकाज।।
कामना पूरी कर दो आज।।१२६।।

एहि भाँति मणिकुण्डल कथामृत उमाशंकर गावहीं।
मन माँहि धर ले ध्यान जो कौतुक जगत में लावहीं।।१।।
विश्वास उर अन्तर बसा लो जीत जग में जावहीं।
श्रद्धा सहित कर पाठ श्रुतिजन सहित द्रुतफल पावहीं।।२।।

कथामृत जो कोई सुने,सब संकट हों दूर।
सिद्धि, भक्ति, धन-धान्य, यश, सुख-सम्पति भरपूर।।
मनवांछित फल प्राप्त हो,संस्कारित सन्तान।
श्रवण, पठन से नित बढ़े,ज्ञान और सम्मान।।
राम, लखन, सीता भरत,हृदय बसहु हनुमान।
मणिकुण्डल शत्रुघ्न संगकरैं राम गुणगान।।
सियावर रामचन्द्र की जय। पवनसुत हनुमान की जय।
महाराजा मणिकुण्डल की जय।.......................।